प्रवासी साहित्यकार तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में भारतीय संकृति और परिवार

Miss. Vishnuswami Rachana P.
Research Scholer
Smt. B. V. Dhanak College, Bagasara

प्रस्तावना :

भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार का श्रेय उन भारतवासियों को जाता है जो समय-सामय पर विदेश गमन करके भारतीय संस्कृति, सभ्यता और धर्म प्रचार करते है। पहले के समय में यह कार्य अपने भाई बंधुओं को और दूतों को भेजकर करते थे। वर्तमान समय में यह कार्य अलग-अलग देशों में रहनेवाले प्रवासी भारतीय कर रहे हैं। वे केवल शारीरिक रूप से ही नहीं जाते, अपने भौतिक सामान के साथ वे अपने मन की गठरी में चुपचाप अपनी संस्कृति जीवन मूल्य और परंपरा बांधकर ले जाते है। विदेश पहुँचकर उस धरती पर बड़े प्यास से इस धरोहर के रक्षण और संवर्धन में जूटे रहते है।

परिचय :

तेजेन्द्र शर्मा का जन्म पंजाब के जगर्राव सहर में २१ अक्तूबर सन् १९५२ को एक मध्यमवर्गीय परिवार में हुआ था। इन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से अँग्रेजी विषय में एम.ए. करने के बाद कई वर्षों तक एयर इंडिया में काम किया। एयर इंडिया में काम करने के पश्चात् १९८८ में ब्रिटेन में बस गए। तेजेन्द्र शर्मा एक ऐसे प्रवासी लेखक है जिनका सृजन काल सबसे लंबा है। अभी तक उनकी दो दर्जन से भी अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। तेजेन्द्र जी की कहानियाँ उनके सजग साहित्यकार होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है। वे अपने पात्रों के माध्यम से अपनी लड़ाई लड़ते है। तेजेन्द्र शर्मा एकमात्र ऐसे प्रवासी लेखक है, जिन्हें महारानी एलिज़ाबेथ द्वितीय के मेम्बर ऑफ द आर्डर द ब्रिटिश एम्पायर सम्मान' के लिए चुना। उन्हें यह सम्मान हिन्दी लेखन, हिन्दी साहित्य की सेवा और सामुदायिक एकजुटता के लिए मिला है।

"तेजेन्द्र शर्मा एक सशक्त एवं सफल साहित्यकार है। उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से मनुष्य के जीवन में व्याप्त दु:ख-दर्द उनकी आन्तिक व मार्मिक दशा को पाठकों के समक्ष इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि वह काल्पनिक होने पर भी सजीव प्रतीत होती है और वह पाठक वर्ग के मानस पटल पर जीवंत होकर उन्हें भाव विभोर कर देती है।"[१]

तेजेन्द्र शर्मा की कहानियों में भारतीय संस्कृति और परिवार :

'हाथ से फिसलती जमीन' कहानी में नरेंद्र के रूप में उन भारतियों की स्थितियों को दर्शाने का प्रयास किया है, जो अपनी तरक्की के लिए अपने देश को छोडकर विदेशों में जाकर बस जाते है क्योंकि उसके देश में उसकी जाती उसकी तरक्की के आड़े आ रही थी। कोई उसके साथ बैठता भी नहीं था, वह एकदम अकेला रहता था। जो भेदभाव का दर्द उसे समाज से मिला था, किन्तु आज वो उसी दर्द का सामना अपने बच्चे के स्कूल जाना चाहता है, किन्तु उसकी पत्नी जैकी उसे वहाँ जाने से मना कर देती है, वो कहती है, "वो क्या है कि उसके स्कूल में अधिकतर बच्चे जैकी का मज़ाक जब तुम स्कूल जाते हो तो बाद में बच्चे जैकी का मज़ाक उड़ाते हैं।"[२] नरेन भारतीय परिवारों की भांति अपने बच्चों को अपनी संस्कृति व संस्कार देना चाहता है किन्तु उसके बच्चे कभी उसके पास बैठते ही नहीं और वे उन्हें कभी अपनी संस्कृति से रूबरू करा नहीं पाता। कभी-कभी वो अकेले बैठे-बैठे सोचता था कि वह अपनी पत्नी के साथ क्यों रह रहा है। तब उसे अपने पिता की कही हुई बात गूँजते लगती है- "जीवन साथी का कोई विकल्प नहीं होता है। विवाह का अर्थ है निभाना।"[३] इन्हीं भारतीय मूल्यों के कारण नरेन अपनी पत्नी का साथ निभाता है। परिवार में रहकर मनुष्य अपने सुख-दु:ख बांटता है। परिवार परिवार समाज की एक महत्त्वपूर्ण इकाई है।

'अपराध बोध का प्रेत' कहानी की नायिका सुरभि एक ऐसी ही स्त्री की है जो नरेन से प्रेम करती है। वो उसकी खुशी के लिए कुछ भी कर सकती है। उनकी बातों से स्पष्ट हो जाता है। "तुम टिफिन में थोड़ा ज्यादा खाना लाया करो ना, मैं तुम्हारा सारा टिफिन खा जाता हूँ और तुम्हें बाजारी छोले भटूरे खाने पड़ते हैं। जानते हो तुम खाते

हो तो मुझे कितना सुख मिलता है।"[४] एक भारतीय नारी होती है जो अपने जीवन से कहीं ज्यादा अपने बच्चों से प्यार करती है। वह चाहती थी कि उसके मरने के बाद उसके बच्चों के बड़े भैया रख ले, परंतु उसकी मान का यह जवाब उसे हिला देता है, वह कहती है "उन्होंने मेरे उम्मीद की किश्ती को तरने से पहले डूबा दिया। कहती है देख भई गुड्डी तेरे बच्चे अलग तरह से पले हैं। उनको हम अपने पास नहीं रख सकते।"[५] जहाँ सुरभि अपने प्रेम व त्याग के कारण एक देवी नजर आती है वहीं नरेन अपने कुत्सित विचारों के कारण अपराधी दिखाई देता है, एक ओर सुरभि अपनी बीमारी से जूझती नजर आती है, वहीं दूसरी ओर नरेन अपने अपराधबोध के प्रेत से लड़ता नजर आता है। भारत की संस्कृति, उसके रीति-रिवाज उसके त्यौहार व उसकी परंपराएँ अन्य देशों से अलग है।

'एक बार फिर होली' कहानी की नायिका नजना भारतीय परिवेश से इस कदर जुड़ी हुई है कि विवाह के बाद पाकिस्तान जाने के बात भी अपनी मातृभूमि से जुड़ी यादों से नहीं भूल पाती है। वह उन्हीं रंगों में डूबी रहती है, जो बचपन से उस पर चढ़े हुए है। उसके पति इमरान की लाख कोशिश के बाद भी नज़मा पूरी तरह से पाकिस्तानी नहीं बन पाती है। कई बार तो भूल जाती है कि वह भारत में नहीं पाकिस्तान में है, उसे होली का त्यौहार बहुत प्रिय है। एक दिन वो जुबेदा से पूछ ही लेती है- "जुबेदा, यहाँ कारांची में हॉली कहाँ खेलते हैं? होली! ये क्या होती है? यह एक त्यौहार होता है, जिसमें सब एक दूसरे पर रंग डालते हैं। अम्मी ने सुन लिया, नज़मा बेटी तू काफिरों जैसी बातें क्यों करती है। रंग खेलना इस्लाम में हराम है, मेरी बच्ची।"[६] भारतीय परिवेश में पाले लोग विदेश में जाने के बाद भी अपनी संस्कृति के रंगों में डूबे रहते हैं।

'गंदगी का बक्सा' कहानी जया और दिलीप की है। इस कहानी के माध्यम से तेजेन्द्र शर्मा ने पति-पत्नी के बदलते सम्बन्धों को उजागर किया है। नारी भारतीय हो या विदेशी, प्रत्येक नारी अपने पति का प्रेम व खुशहाल परिवार चाहती है, किन्तु आज के स्माय में पति-पत्नी के सम्बन्धों का आधार मात्र सामाजिक दबाव व अपनी अपनी जरूरतों तक सीमित रह गया हैं। दिलीप और जाया के बीच का प्रेम शादी के बाद समाप्त होता जाता है। जया राज की ओर आकर्षित होने लगती है वी स्वयं कई बार अपने आपसे पूछती है कि "यदि दिलीप और उसके बीच एक खाई सी न बन गयी होती तो क्या राज उसकी सोच के दायरे में कदम भी रख सकता है।"[७]

'जीना यहाँ किसके लिये' कहानी का जीतू के रूप में मनुष्य के उस रूप को दिखाने का प्रयास कर रहा है जब वो किसी परिस्थिति में निर्णय लेने में स्वयं को अक्षम समझता है किन्तु वो परिस्थिति किसी अन्य रूप में उसके सामने आती है तो वह तुरंत निर्णय ले लेता है। जीतू के पिता ५ साल से बिस्तर पर अपना जीवन जी रहे हैं और दिन-रात जीतू से स्वयं के लिए मृत्यु की मांग करते हैं। जो उन्हें मृत्यु देने से घबराता है, किन्तु दूसरी परिस्थिति उसके सामने आती है। उसकी पत्नी के गर्भ को मात्र छह माह ही हुए कि डॉक्टर ऑपरेशन करने की सलाह देते हैं और बताते हैं कि बच्चा अगर बच भी गया तो इंजेक्शन और दवाइयों पर जिंदा रखना पड़ेगा। क्या वो उन्हें बचाना चाहते हैं? तो जीतू डॉक्टर को तुरंत अपना निर्णय सुना देता है- "हैरी और एण्डी अब इंजेक्शनों का दु:ख नहीं सहेंगे, उन्हें मुक्ति अवश्य मिलेगी।"[८] अंत में वो इसी अपराध बोध में रहता है कि अपने पिता के लिए कुछ भी नहीं कर पाया किन्तु अपने बच्चों के लिए इतनी जल्दी निर्णय कैसे ले लिया।

'ढिबरी टाईट' ऐसे भारतीयों की कहानी है जिनके पास सब कुछ है किन्तु उतने में उन्हें संतोष नहीं होता और अधिक पाने की लालच में अपना सब कुछ खो देते हैं। कहानी का नायक गुरमीत एक ऐसा व्यक्ति है जिसके पास अच्छा घर, खेती-बाड़ी थी। यह सब छोडकर वो अपने मित्रो द्वारा सुनाई गयी विदेशों की कहानियों में बहकर विदेश चला जाता है। वो अपना छोटा परिवार गंवा बैठता है और कुछ भी नहीं कर पाता है। दो वर्ष से वह दु:ख के गहरे समुद्र में डूब चुका था जहाँ से उसे खींचकर निकल पाना मुश्किल ही नहीं असंभव सा लग रहा था। उसकी चुप्पी तो तब टूट जाती है जब उसे समाचार मिलता है कि इराक द्वारा कुवैत पर कब्जा कर लिया है। आज उसका सब्र का बान टूट जाता है। उसका छुपा हुआ दर्द सबके सामने आ जाता है। वह हंस भी रहा था उयर उसकी आँखों से आँसू भी झलक रहे थे। वो कमरे से बाहर आया और चिल्लाने लगता है- "यह समा अमीर गया, यह गया

क्राउन प्रिंस, रसाला कहता था- सोने की चादर की कार बनवाऊँगा। भाग गया उल्लू का पट्ठा। सब रसाले भाग लिए, ओये दारजी खुशियाँ मनाओ। ओये, आज तो जी भर के शराब पीओ। ओये, ओन्हा दी ता माँ गयी ओ, तो गया सौखों नु करती सालयाँ दी ढिबरी टाईट।"[९]

'पासपोर्ट का रंग' कहानी में दोहरी नागरिकता की कशमकश को बताया गया है। गोपालदास दोहरी नागरिकता की तरस में उलझकर छटपटाते रहते हैं। कानून मानवीय संवेदना पर हावी हो जाता है और गोपालदास अपनी भारतीय संस्कृति और मातृभूमि की झलक देखने के लिए तरस जाते है। अपनी माटी की खुशबू को महसूस करने की इच्छा लिए वहाँ चले जाते हैं जहाँ पासपोर्ट नागरिकता की कोई जरूरत नहीं होती है।

'कब्र का मुनाफा' कहानी में लेखक ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि किस तरह विदेशों में अंतिम संस्कार एक व्यापार बन गया है। परिवार के लोग शव की जैसी साज सज्जा करवाएँगे, उन्हें उनके अनुसार ही डालर देने कब्र का रीजर्वेशन कराते हैं और वह भी ऊंचे दर्जे के कब्रगार में। समय के साथ कब्र की कीमत बढ़ती है यही कब्र का मुनाफा है।

निष्कर्ष :

आधुनिक प्रवासी भारतीयों के लिए चिंता का एक मुख्य कारण है कि किस प्रकार वे अपने संस्कार, रीति-रिवाज और अपनी धनी भारतीय संस्कृति को विदेशी धरती पर रह रहे हो फिर भी वह भारतीय संस्कारों को नहीं भूलते। यो अपने लेखन का श्रेय अपने पिता व अपनी दिवंगत पत्नी इंदुजी को देती हैं। वे कहते हैं अगर मैं इन्दु का पति न होता तो एक सफल लेखक न होता, वो हमेशा अपने परिवार को आगे रखते है और यही बात उसकी कहानियों में उभरकर सामन आती है।

संदर्भ :

१. प्रो. प्रदीप श्रीधर, प्रवासी हिन्दी साहित्य और तेजेन्द्र शर्मा, पृ. सं. ६६
२. डॉ. कमल किशोर गोयनका, (सं.) प्रवासी साहित्य : जोहन्सबर्ग से आगे, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, पृ. सं. २१८
३. वहीं, पृ. सं. २२५
४. तेजेन्द्र शर्मा, तेजेन्द्र शर्मा की दस कहानियाँ, पृ. सं. ५
५. वहीं,पृ. सं. ८
६. वहीं, पृ. सं. १४
७. वहीं, पृ. सं. २७
८. वहीं, पृ. सं. ५५
९. वहीं, पृ. सं. ३३